हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IX (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL9**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): जगदीश

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 9 11-9-18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	2	5	1	2	7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्याकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप

खड़ी बोली हिन्दी ने २० वीं सदी में आकर प्रमुख काव्यभाषा का दर्जा हासिल किया किन्तु इसका साहित्यिक विकास हिन्दी की अन्य बोलियों के साथ ११ वीं सदी से ही शुरू हो गया था।

नाथ साहित्य में बौद्धों की वज्रयान शाखा की सिद्ध परम्परा के विरोध में उठ खड़ा हुआ एक आन्दोलन था जिसमें गोरखनाथ, चर्पटीनाथ, जलंधरनाथ इत्यादि नाथपंथी साधु शामिल थे।

नाथों की रचनाओं, विशेषत: गोरखनाथ की रचनाओं में खड़ी बोली हिन्दी के आरंभिक लक्षण दिख जाते हैं। उदाहरण के लिए

"नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै तब अंतरि बसै भंडारा"

इसी प्रकार उनकी ईश्वर सम्बंधी मान्यताओं को दर्शाती निम्नलिखित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पंक्तियों में भी खड़ी बोली अपने आरम्भिक स्वरूप में नजर आती है -

अंजण माँहि निरंजण रहिया तिल मुख भेद्यातेलं।
मूरति माँहि अमूरति परस्या भया निरंतर खेलं।

इस प्रकार नाथों की खड़ी बोली में निम्नलिखित विशेषताएँ देखी जा सकती हैं :

→ 'न' के स्थान पर 'ण' ध्वनि का प्रयोग
→ अनुस्वार, अनुनासिक का अत्यधिक प्रयोग,
→ नौ, लख जैसे संख्यावाचक शब्द मानक हिन्दी से मिलते जुलते हैं।
→ 'खेलं', 'नसैं' जैसे शब्द ब्रज के निकट हैं।

वस्तुतः खड़ी बोली के आरम्भिक विकास में सिद्धों तथा नाथों का महत्वपूर्ण योगदान है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ. रघुवीर ने वर्तमान हिन्दी की मानक शब्दावली के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया क्योंकि उन्होंने अकेले ही 5 लाख से अधिक पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर लिया।

डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्दावली बनाते समय शब्द को देवनागरी लिपि के साथ तेलुगू, तमिल, कन्नड तथा बांग्ला लिपियों में भी लिखा।

उन्होंने 'आंग्ल-भारतीय महाकोश' नामक ग्रंथ में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, सांख्यिकी तथा वैज्ञानिक शब्दावलियों का संकलन किया।

डॉ. रघुवीर हिन्दी के पुनरुत्थानवादी शब्दावली निर्माता माने जाते हैं क्योंकि उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि हिन्दी की शब्दावली निर्माण में संस्कृत शब्दों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्योंकि संस्कृत से निर्मित शब्द अर्थ की दृष्टि से पारदर्शी होते हैं तथा एक ही मूल शब्द से कई और शब्दों का निर्माण किया जा सकता है।
जैसे - law का अर्थ कानून लेने पर इससे legislative शब्द नहीं बनाया जा सकता किंतु इसका अनुवाद 'विधि' करने पर इससे विधायक, विधानमंडल, वैध, अवैध इत्यादि शब्द बनाए जा सकते हैं।

इसके अलावा उन्होंने शब्द के स्वतः सार्थक होने तथा संक्षिप्त होने पर बल दिया। जैसे - Railway Signal के लिए लोहपथ गमनागमन सूचक पट्टिका के स्थान पर 'संकेतक' शब्द है।

वस्तुतः वे अकेले ही शब्दावली के क्षेत्र में महामानव के रूप में उभरे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा - वह भाषा जिसे किसी देश के बहुसंख्यक लोग बोलते हों तथा जिससे भावनात्मक झुकाव महसूस करते हों।

राजभाषा - संविधान/सरकार द्वारा सरकारी कामकाज के लिए प्रधिकृत भाषा राजभाषा कहलाती है

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
• बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा	• सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली भाषा
• अनिश्चित, गैर वैधानिक तथा औपचारिक शब्दावली	• निश्चित, वैधानिक तथा औपचारिक शब्दावली
• आत्मनिष्ठता के कारण साहित्य में प्रयुक्त	• वस्तुनिष्ठता के कारण साहित्य में प्रयोग नहीं
• कभी बदलना संभव नहीं	• मात्र सरकारी आदेश से बदला जा सकता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
• अपने देश की भाषा ही हो सकती है	• विदेशी भाषा भी हो सकती है (औपनिवेशिक काल)
• कोई भी परिवर्तन स्वाभाविक तथा धीरे-धीरे होगा।	• कोई भी परिवर्तन ऊपर से थोपा जा सकता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) 'अवधी' बोली

'अवधी' अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी उपभाषा वर्ग की एक बोली है जिसका प्रयोग क्षेत्र अयोध्या, फैजाबाद, लखनऊ, सीतापुर, बहराइच, गोण्डा, बाराबंकी इत्यादि जिले हैं।

इसका नाम अवध क्षेत्र या अयोध्या से व्युत्पन्न है इसे प्राचीन कोसल प्रदेश के नाम पर कोसली या बैसवाड़ी भी कहा जाता है।

अवधी का प्राचीनतम उल्लेख अमीर खुसरो की खालिकबारी में मिलता है। इससे जाहिर है कि 13वीं सदी के अन्त तक अवधी एक स्वतंत्र भाषा बन चुकी थी।

इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ

· ध्वनि सम्बन्धी विशेषताएँ

व → ब (विश्वामित्र → बिस्वामित्र)
ण → न (रावण → रावन)
~~ड़ → ड़~~
ड़ → र (लड़का → लरिका)
श → स (कौशल्या → कौसल्या)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ

- इस बोली में औ तथा ऐ का उच्चारण संध्यक्षरों के रूप में होता है जैसे - पइसा, अउरत
- संज्ञा के तीन रूप पाए जाते हैं
  लरिका, लरिकवा, लरिकउना
- 'इया' तथा 'उवा' प्रत्ययों का प्रयोग बहुतायत में होता है।
  जैसे - स्कूलवा, किताबिया
- इस बोली के सर्वनाम
  अन्य पुरुष - वे, ओका, ओनका, ओकरा
  मध्यम पुरुष - तुम, तुन्ह, तुहार, आपहिं
  उत्तम पुरुष - हम, हमहिं, हमार, हमका
- कर्ता कारक में निर्विभक्तिक प्रयोग भी देखने को मिलते हैं।

अवधी बोली ने मध्यकाल में सूफी काव्यधारा तथा रामभक्ति काव्यधारा को भाषायी आधार दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा और बोली में अन्तरों के सम्बन्धों में कुछ विद्वानों का मत है कि इनमें भाषा वैज्ञानिक अन्तर नहीं, बल्कि समाजभाषा वैज्ञानिक अन्तर मौजूद है। भाषायी दृष्टिकोण से भाषा व बोली समान स्तर पर हैं।

समाजभाषा वैज्ञानिक अन्तरों से यहाँ तात्पर्य है कि समान स्तर पर मौजूद बोलियों में से जिस बोली को सामाजिक मान्यता मिल जाए कि इस बोली का प्रयोग राजकाज, व्यापार तथा शिक्षा के क्षेत्र में समान रूप से किया जाएगा तो वह बोली 'भाषा' का रूप ले लेती है।

निष्कर्षतः सामाजिक, राजनीतिक मान्यता प्राप्त बोली ही भाषा कहलाती है। उदाहरण के लिए - मध्यकाल में ब्रज तथा अवधी भाषाएँ थी जबकि वर्तमान में ये दोनों बोलियों के रूप में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली हिन्दी के अधीन है

जब तक अवधी तथा ब्रज को भाषा का दर्जा था, इनमें व्यापक साहित्य की रचना हुई तथा ब्रजभाषा तो अखिल भारतीय काव्यभाषा भी बनी किन्तु खड़ी बोली हिन्दी के अधीन होते ही इतना साहित्यिक विकास भी बाधित हो गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की विभिन्न बोलियों ने साहित्येतिहास में विभिन्न उतार-चढ़ाव देखे हैं किन्तु जिस बोली ने सर्वाधिक उतार-चढ़ाव झेले, वह ब्रजभाषा ही थी।

ब्रजभाषा शब्द का प्रयोग चाहे 16 वीं सदी में मिलता हो किन्तु इसकी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ उससे पहले से दिखती हैं। जलंधरनाथ के पदों तथा पृथ्वीराज रासो में प्रारंभिक ब्रजभाषा की झलक नज़र आती है। सुधीर अग्रवाल की 1354 ई. की रचना 'प्रद्युम्न चरित' में ब्रजभाषा अपने शुरुआती स्वरूप में नज़र आती है।

ब्रजभाषा का चरम विकास मध्यकाल में सूर के हाथों हुआ। जिस प्रकार अवधी जायसी और तुलसी को पाकर धन्य हो गई, उसी प्रकार ब्रजभाषा सूर की ऋणी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वल्लभाचार्य के साथ-साथ अष्टछाप का समस्त काव्यकर्म ब्रजभाषा में ही है। सूर ने ब्रजभाषा को चलती हुई बोली से एकाएक काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

आचार्य शुक्ल का इस सम्बन्ध में विस्मय भरा कथन है कि "सूरसागर किसी पहले से चली आ रही परम्परा - चाहे वह मौखिक ही रही हो - का पूर्ण विकास सा जान पड़ता है न कि आरम्भिक बिन्दु।"

सूर की ब्रजभाषा में अवधी तथा पंजाबी के शब्द भी आए एवं ब्रज का भाषायी स्वरूप स्पष्ट हुआ। सूर ने ब्रजभाषा में अनुभाव योजना तथा संगीतात्मकता से चरम कलात्मकता को भर दिया।

सूर के अलावा रहीम, मीरा, नंददास तथा परमानंददास के हाथों भी ब्रज का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषाई विकास हुआ।

तदुपरान्त उत्तर मध्यकाल अर्थात् रीतिकाल में ब्रज ने अखिल भारतीय काव्यभाषा का दर्जा हासिल किया। भक्तिकाल में केवल भक्त थे जबकि रीतिकाल के कवियों ने ब्रजभाषा का चरम शिल्पगत विकास किया। बिहारी तथा देव के हाथों में पड़कर ब्रजभाषा शृंगार, प्रेम व माधुर्य गुण को पेश करने में सक्षम एकमात्र भाषा के रूप में सामने आई।

जहाँ बिहारी ने ब्रज में अनुभाव विधान, समाहार क्षमता, जीवन्त बिम्बों तथा आलंकारिकता का समावेश किया वहीं घनानन्द जैसे कवियों ने संवेदनशीलता पर बल दिया। ये दोनों प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट हैं –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है नैननुं ही सों बात"
— बिहारी की
चामत्कारिता

"तुम कौन धौं पाटि पढ़े हो लला
मन लेहु पै देहु छटांक नहीं"
— घनानन्द की
संवेदनशीलता

आधुनिक काल में ब्रजभाषा खड़ी बोली के अधीन हो गई थी द्विवेदी युग व छायावाद में ब्रजभाषा का काव्यभाषा का दर्जा भी छिन गया क्योंकि वह रीतिकालीन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त आधुनिक काल की जटिलताओं को धारण करने में असमर्थ हो गई थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सर्वनाम का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम का अर्थ उन शब्दों से है जो संज्ञाशब्दों की वाक्य में बार-बार आवृत्ति से बचने के लिए कई संज्ञाओं के स्थान पर समान रूप से प्रयुक्त किए जाते हैं।

हिन्दी में मुख्यतः छः सर्वनाम हैं जो इस प्रकार हैं -

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम
अन्य पुरुष	वह	वे

विशेष :- पूर्वी हिन्दी में मैं के स्थान पर 'हम' तथा हम के स्थान पर 'हमलोग' का प्रयोग किया जाता है।

:- 'तू' का प्रयोग निन्दनीय माना जाता है अतः 'तू' के स्थान पर 'तुम' तथा 'तुम' के स्थान पर 'तुमलोग' का प्रयोग किया जाता है।

:- अन्य पुरुष तथा मध्यम पुरुष में सम्मानवश 'आप' का प्रयोग किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2 प्रश्न वाचक सर्वनाम - वह, व्यक्ति, स्थान की प्रश्नवाचकता को दिखाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे - 'राम अयोध्या गया' में 'राम' 'कहाँ' 'गया' का प्रयोग करने पर 'वहाँ' शब्द अयोध्या की प्रश्नवाचकता दिखलाता है।

3 निश्चय वाचक सर्वनाम - निश्चित सूचना देने हेतु इस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
जैसे - वही, यही, यहीं, वहीं

4 अनिश्चय वाचक सर्वनाम - अनिश्चित सूचनाएँ दिखाने के लिए इस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
जैसे - कहीं, कोई इत्यादि

5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम - दो वाक्यों अथवा उपवाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम सम्बंध वाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – जो, सो

6 निजवाचक सर्वनाम – स्वामित्व या अधिकार दिखलाने हेतु इस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।
जैसे – अपना, अपनी, अपने

सर्वनाम
- पुरुषवाचक
- प्रश्नवाचक
- निश्चयवाचक
- अनिश्चयवाचक
- सम्बन्धवाचक
- निजवाचक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी अवस्था है जिसका प्रयोग समय 7 वीं से 9 वीं सदी के बीच माना जाता है।

अपभ्रंश के साहित्यिक प्रमाण बौद्ध, जैन तथा शैव रचनाओं में देखे जा सकते हैं।

इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ

① ध्वनि सम्बन्धी विशेषताएँ

- स्वर - अपभ्रंश में 'ऐ' तथा 'औ' का अभाव था तथा 'ए' व 'ओ' दीर्घ स्वर और 'ऍ' व 'ऑ' ह्रस्व स्वर के रूप में प्रयुक्त होते थे।
- 'ऋ' का प्रयोग तत्सम शब्दों में बना हुआ था जबकि सामान्य शब्दों में ~~ऋ का~~ 'ऋ' का परिवर्तन अ, इ, ए, रि में हो गया था
  जैसे - गृह → गेह

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- स्वर भक्ति - व्यंजन संयोगों को सरल बनाने के लिए उनके बीच में स्वर लगा जाने की प्रवृत्ति थी।
उदा. - क्रिया → किरिया

- व्यंजन - अपभ्रंश में ङ, ञ, ण, श, ष व्यंजन नहीं थे। ड़ तथा ढ़ व्यंजन प्रथम बार अपभ्रंश में ही दिखते हैं।
- क्षतिपूरक दीर्घीकरण - कठिन व्यंजन संयोगों को सरल बनाने के लिए ~~संयुक्त~~ व्यंजन को द्वित्वीकृत कर दिया जाता था तो आदि स्वर को दीर्घ करके क्षति की पूर्ति की जाने लगी।
जैसे - कर्म → कम्म → काम
- धर्म → धम्म → घाम
- क, च तथा त वर्ग के अल्पप्राण व्यंजन अ अथवा य में तथा महाप्राण व्यंजन 'ह' में बदलने लगे।
जैसे - वचन → वयण
मुख → मुंह

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

② व्याकरण सम्बन्धी विशेषताएँ

- संज्ञा व कारक व्यवस्था
  - निर्विभक्तिक प्रयोग आरंभ हुए।
  - सभी प्रतिपदिक स्वरान्त हुए तथा स्वरान्त प्रतिपदिक अकारान्त होने लगे
  - परसर्गों का प्रारम्भिक विकास
- सर्वनाम
  - महार, तुहार जैसे पूर्वी सर्वनामों का विकास हुआ।
  - 'तुम्हें' सर्वनाम का विकास
- ~~काल~~ काल व्यवस्था
  - संस्कृत तथा हिन्दी दोनों प्रत्ययों का प्रभाव
- लिंग व्यवस्था
  - नपुंसक लिंग का लोप
- वचन व्यवस्था
  - द्विवचन का लोप

③ शब्दावली सम्बन्धी विशेषताएँ

- तद्भव शब्दावली सर्वाधिक थी।
- तत्सम शब्दों की संख्या प्रायः बढ़ रही थी।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ब्रज शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी उपभाषा की बोली है वहीं अवधी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी उपभाषा की बोली है। इन दोनों बोलियों में काफी समानता है किन्तु इनके अन्तरों को निम्नलिखित सारणी के माध्यम से समझा जा सकता है -

• ऐतिहासिक विकास

ब्रजभाषा - शौरसेनी अपभ्रंस से विकसित पश्चिमी उपभाषा की

अवधी - अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी उपभाषा की।

• प्रयोग क्षेत्र

ब्रज - मथुरा, आगरा, अलीगढ़, बदायूँ बरेली, भरतपुर

अवधी - अयोध्या, फैजाबाद, सीतापुर, गोण्डा, बहराइच, लखनऊ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आरम्भिक उदाहरण

ब्रज - सिद्धों तथा रासो काव्यों के साथ प्राकृत पैंगलम् तथा दामोदर पंडित कृत उक्ति - व्यक्ति प्रकरण में

अवधी - रोडा कृत राउलवेलि तथा दामोदर पं. कृत उक्ति - व्यक्ति प्रकरण में

ध्वनि सम्बंधी विशेषताएँ

ब्रज - ड़ → ड़ (जुरतो → जड़तो)
- ण → न (बाण → बान)

अवधी - व → ब (विश्वामित्र → बिस्वामित्र)
श → स (कौशल्या → कोसल्या)
ड़ → र (लड़का → लरका)
ण → न (रावण → रावन)

संज्ञा व कारक व्यवस्था

अवधी - संज्ञा के तीन रूप है। जैसे लरिका, लरिकवा, लरिकउना

कारक - कर्ता - ने, x
कर्म - कुँ, कः, को

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करण - सों, सेंति, तें, सूँ
सम्प्रदान - कर्म के समान
अपादान - करण के समान
सम्बन्ध - केर, केरा, केरी
अधिकरण - माहि, में, पर

ब्रज - संज्ञा का एक ही रूप

कारक - कर्ता - ने
कर्म - को, कूँ, न्ह
करण - सों, से
सम्प्रदान - लागि, हित
अपादान - करण के समान
सम्बन्ध - का, के, की

सर्वनाम व्यवस्था

अवधी - अन्य पुरुष - वह, वे, उन्ह, ओकरा
मध्यम पुरुष - तुम, तुम्ह, तोहार, तिहार
उत्तम पुरुष - मैं, मोहि, हमहुँ, हमार

ब्रज अन्य पुरुष - वे, ओनको,
मध्यम पु. - तोहि, तोको, हमको
उत्तम पु. - मोहि, हमहो.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्य

अवधी - राम भक्ति काव्यधारा
- प्रेमाश्रयी काव्यधारा

ब्रज - कृष्णभक्ति काव्यधारा
- रीतिकालीन काव्यधारा

वस्तुतः ब्रज तथा अवधी दो अलग-अलग इलाके की ही बोलियाँ हैं, इसलिए स्वाभाविक तौर पर इनमें पर्याप्त अंतर मौजूद है लेकिन खान-पान के क्षेत्र में बोले जाने पर एक-दूसरे पर इनका पर्याप्त प्रभाव भी पड़ा है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में वर्तमान में दो लिंग मौजूद हैं - स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग। ऐतिहासिक रूप से संस्कृत में तीन लिंग थे जिनमें नपुंसक लिंग भी शामिल था किन्तु विकास के क्रम में अपभ्रंश के बाद नपुंसकलिंग लुप्त हो गया।

वर्तमान हिन्दी की लिंग संरचना लोक प्रचलन से विकसित है अतः इसमें ठोस व वस्तुनिष्ठ नियमों का अभाव है।

हिन्दी की लिंग व्यवस्था

→ पुल्लिंग शब्द अकारान्त तथा आकारान्त होते हैं जबकि स्त्रीलिंग शब्द आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, एकारांत होते हैं।

विशेषतः पुल्लिंग व्यक्तिवाचक शब्द अकारान्त तथा पुल्लिंग जातिवाचक शब्द आकारान्त होते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरण - राम - पुल्लिंग व्यक्तिवाचक
कमरा - पुल्लिंग जातिवाचक

→ आ, आनी, ई, आरिन, रपा, इका इत्यादि प्रत्ययों से पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग शब्दों में बदला जाता है।

सेवक → सेविका
घोड़ा → घोड़ी
ठाकुर → ठकुराइन

→ हिन्दी में क्रियाएँ लिंग के अनुरूप परिवर्तनशील होती हैं।

जैसे - राम जाता है।
- सीता जाती है।

→ हिन्दी में आकारान्त विशेषण लिंग के अनुरूप परिवर्तनशील होते हैं।

जैसे → मोटा लड़का → मोटी लड़की

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की लिंग व्यवस्था लोक प्रचलित नियमों पर आधारित होने के कारण इसमें कई समस्याएं भी हैं -

- लिंग निरपेक्ष पदार्थों तथा उभयलिंगी वस्तुओं का लिंग निर्धारण कठिन हो जाता है।
  जैसे - बस, ट्रक, रेल, स्मारक
- निर्जीव पदार्थों का लिंग निर्धारण कठिन है।
- पदनामों के प्रयोग में असमंजस की स्थिति रहती है।
  जैसे - राष्ट्रपति, सेनापति
  इन्हें राष्ट्रपत्नी या सेनापत्नी कहना हास्यास्पद है।

वस्तुतः हिन्दी की लिंग व्यवस्था मानकीकृत हो है किन्तु लोक व्यवहार की व्युत्पत्ति के कारण इसके प्रयोग में कई समस्याएँ भी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरियाणी' बोली का परिचय देते हुए उसकी व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

'हरियाणी' बोली शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की एक बोली है। इस बोली के अन्य नाम बाँगरू, हरियाणवी इत्यादि हैं। इसका प्रयोग क्षेत्र पानीपत, सोनीपत, झज्जर, जींद इत्यादि जिलों में पड़ता है। यह खड़ी बोली तथा राजस्थानी हिन्दी से अत्यधिक साम्यता रखती है।

इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ

→ 'न' का 'ण' रूप में, 'ल' का 'ळ' रूप में तथा 'ड़' का 'ड' रूप में उच्चारण किया जाता है।

जाना है → जाणा है

बड़ा → बडा

काला → काळा

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ द्वित्वीकृत व्यंजन - परवर्ती व्यंजन को द्वित्वीकृत करने की प्रवृत्ति हरियाणी में खड़ी बोली से आई है।

उदा० - बड़ा → बड्डा

→ आरम्भिक 'अ' को ओ, ए, इ में बदलने की प्रवृत्ति भी देखी जाती है।

उदा० - नहुत → नोहत
जवान → जुवान

→ 'नै' परसर्ग का प्रयोग कर्ता, कर्म तथा सम्प्रदान तीनों कारकों के लिए किया जाता है।

उदा० - तन्नैं जाणा है (तेरे को)

→ सैं, स्यूं जैसे प्रयोग हरियाणी में सहायक क्रियाओं के स्थान पर किए जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) दिनकर की कृति उर्वशी का प्रतिपाद्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने 'उर्वशी' नामक कृति में वर्तमान जीवन की बड़ी समस्या 'यौन अतृप्ति तथा पुरुषार्थों में काम पक्ष' को पौराणिक परिवेश के माध्यम से खुलासा का प्रयास किया है।

वस्तुतः 'उर्वशी' में उर्वशी सनातन नारी का प्रतीक है तथा 'पुरुरवा' नामक पात्र अतृप्त पुरुष का। पुरुरवा उर्वशी के प्रति सहज आकर्षण रखता है। इनके मनोभावों का बड़ा ही मर्मस्पर्शी व प्रमाणिक चित्रण दिनकर ने किया है।

दिनकर मानते हैं कि यौन कुण्ठाएँ आज के समय की सबसे बड़ी समस्या है। इसके लिए उन्होंने उर्वशी में नवयुवकों में उद्दाम यौन लिप्साओं तथा भोग का वर्णन किया है वे सहज आकर्षण तथा आकर्षण के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शारीरिक पक्ष को महत्व देते हैं।

'उर्वशी' काव्य में दिनकर ने उर्वशी के सौन्दर्य चित्रण में भी अभूतपूर्व सफलता पाई है। मूलतः ओज गुण के कवि होते हुए भी दिनकर ने माधुर्य तथा शृंगार भाव से उर्वशी के अलौकिक सौन्दर्य को उभारा है।

वस्तुतः उर्वशी काव्य हिन्दी साहित्य के उन सीमित काव्यों में से है जो पुरुषार्थ के काम पक्ष को महत्व देते हैं।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास एक आधुनिक कथात्मक विधा है तथा यह मूलतः यथार्थवादी कला है। यथार्थवादी होने के कारण यह आवश्यक रूप से अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित होती है तथा स्वाभाविक तौर पर भूमण्डलीकरण ने उपन्यास को गहरे तौर पर प्रभावित किया है।

इस दौर में उत्तर आधुनिकतावाद पर उपन्यास लिखे गए हैं जो विचारधारा तथा इतिहास के अंत, निजीकरण, उपभोक्तावाद तथा विकेन्द्रीकरण आदि विषयों पर आधारित हैं:

हरिया हरक्यूलिस की हैरानी - ग्लोबल विलेज
हमजाद - नर-नारी की यौन समस्याएँ

मनोहर श्याम जोसप द्वारा लिखित उपर्युक्त उपन्यास भूमण्डलीकरण के दौर में उपन्यासों में आए बदलाव का यथार्थ प्रतिनिधि पेश करते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अलावा कृष्ण बलदेव वैद द्वारा लिखा गया उपन्यास 'बिमल उर्फ जाएँ तो जाएँ कहाँ' पहला उत्तर आधुनिकतावादी उपन्यास माना जाता है।

वैश्वीकरण से प्राचीन संस्कृति पर पड़ती चोटों का प्रामाणिक चित्रण काशीनाथ सिंह ने अपने उपन्यासों 'काशी का अस्सी तथा 'रेहन पर रग्घू' में किया है।

मीडिया तथा ग्लैमर की चमक-दमक को उघाड़ने वाले उपन्यास हैं-

लेकिन दरवाजा - पंकज बिष्ट
रात का रिपोर्टर - निर्मल वर्मा

इस प्रकार हिन्दी उपन्यासों को भूमण्डलीकरण ने शिल्प तथा कथ्य दोनों स्तरों पर प्रभावित किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न क्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के प्रतिनिधि रचनाकार हैं जिन्होंने भारतेन्दु के नेतृत्व में हिन्दी साहित्य के समुचित दिशा प्रदान की।

हिन्दी गद्य की विविध विधाओं में भट्ट का योगदान -

निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट → अपने विचारात्मक निबन्धों के चरण बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी का स्टील कहा जाता है। प्रतिभा, चारित्र, नाम, काम, एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न, प्रेम के वाग का सैलानी इत्यादि इनके प्रमुख निबन्ध हैं।

सम्पादक बालकृष्ण भट्ट - इन्होंने हिन्दी के महत्त्वपूर्ण पत्रों में से एक "हिन्दी प्रदीप" का सम्पादन किया तथा राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मुद्दों को अपने पत्र के माध्यम से उठाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आलोचक लालकृष्ण भट्ट - हिन्दी की पहली व्यावहारिक आलोचना करने का श्रेय भी लालकृष्ण भट्ट को ही जाता है उन्होंने अपने पत्र में लाला श्रीनिवास दास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की पहली व्यावहारिक समीक्षा की थी।

भाषायी योगदान - लालकृष्ण भट्ट ने आरम्भिक स्वरूप में मौजूद खड़ी बोली हिन्दी को मानक स्वरूप प्रदान किया तथा राजा लक्ष्मण सिंह की तत्समप्रधान हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में स्वीकार किया।

निष्कर्षतः भट्ट जी ने साहित्य परम्परा में बहुआयामी योगदान किया।

(घ) रामचंद्रिका की संवाद-योजना

रामचंद्रिका रीतिकालीन कवि केशवदास द्वारा रचित रामकथा है जो उन्हें भक्तिकाल में प्रतिष्ठित करती है।

रामचंद्रिका को जिन विशिष्टताओं के लिए जाना जाता है उनमें से सर्वप्रमुख है 'संवाद योजना'।

विशेषताएँ

- रामचंद्रिका में कथानक का विकास संवादों के सहारे ही हुआ है जो किसी भी कृति में संवादों की सफलता का चरम स्तर है।
- रामचंद्रिका के संवादों में एक ही पंक्ति में बहुत सी व्यंजनाएँ दे दी गई हैं जो 'गागर में सागर' की कहावत को चरितार्थ करती है।

जैसे -

" मातु, नृपतात कहाँ? गए सुरलोकहिं, क्यों सुत सोकलये। "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ रामचंद्रिका का रावण-अंगद संवाद तुलसी के रावण-अंगद संवाद से भी कहीं अधिक सुन्दर बन पड़ा है। जैसे -
" राम को काम कहा ? रिपु जीतहिं, कौन कबै रिपु जीत्यौ कहा ?"

→ रामचंद्रिका की संवाद योजना निरापद भी नहीं है। कहीं-कहीं शब्दों की कमी, वाक्यों का अधूरापन तथा अशक्त व फालतू शब्दों का प्रयोग खटकते हैं।

" श्री। धी। री। धौं।
राम। नाम। सत्य। धाम"

निष्कर्षतः रामचंद्रिका को अपनी संवाद योजना में सर्वाधिक सफलता मिली है तथा इसी से केशव साहित्य में विशेष प्रतिष्ठित हुए।

(ङ) कहानी का रंगमंच

आधुनिक रंगमंचकारों ने नए-नए प्रयोग किए हैं जिनमें प्रमुख है कहानी को नाटक की तरह रंगमंच पर मंचित करना।

इसमें न तो कहानी का नाटकीय पाठ किया जाता है और न ही कहानी को संवादों में तोड़ा जाता है। कुछ भाग को वक्ता द्वारा सुनाया जाता है, कुछ भाग को मंचित किया जाता है तो कुछ भाग तीसरे पात्रों द्वारा अभिनय करके पेश किया जाता है।

निर्मल वर्मा की तीन कहानियों का मंचन 'तीन एकांत' नाम से किया गया जो कहानी की रंगमंच पर पहली सशक्त उपस्थिति थी।

वस्तुतः आधुनिक समय में नाटकों की कमी है क्योंकि नाटक एक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जटिल विधा है जिसमें लेखक पर विविध प्रकार के दबाव रहते हैं अतः आधुनिक कालीन लेखक नाटक लिखने से कतराते हैं।

इसी कारण नाटकों तथा काव्य रचनाओं का नाट्यीय मंचन का रास्ता साफ हुआ।

इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद हिन्दी कविता की दृष्टि से समृद्धतम कालखण्डों में से एक है। छायावाद में वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना, सौन्दर्य चेतना, प्रकृति प्रेम, शैलीगत वैशिष्ट्य आदि तत्व रचनाओं के केन्द्र में है।

सौन्दर्य चेतना की दृष्टि से छायावादी कवि प्रयोगवाद तथा नए कवियों से भी आगे हैं। छायावादी सौन्दर्य चेतना –

- प्रकृति की सुन्दरता पर बल – छायावादी कवि प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन करते समय उसे मानव तथा ईश्वर से भी सुन्दर बतलाते हैं।

" छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन,
छोड़ अभी से इस जग को।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

· प्राकृतिक सौन्दर्य का मानवीकरण - छायावादी कवि मानवीकरण अलंकार के माध्यम से प्रकृति में मानवीय भावों का आरोपण करते हैं -

" मेघमय आसमान से उतर रही
संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे, धीरे, धीरे"
- निराला

· मानवीय सुन्दरता का वर्णन - छायावादी कवि इस जगत को निस्सार नहीं मानते हैं। स्वच्छंदतावादी कवियों बायरन, शैली, कीट्स की भाँति वे मानवीय सौन्दर्य का चाव से उद्घोष करते हैं -

" सुन्दर हैं सुमन, विहग सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम"

· भावनामूलक तथा उदात्त सौन्दर्य -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद का सौन्दर्य रीतिकाल की भाँति दैहिक तथा छिछला नहीं है बल्कि भावनामूलक तथा उदात्त है जिसमें दैहिक पक्ष की भूमिका नगण्य है।

"तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान"

• कल्पना से सुंदर जगत निर्माण - छायावादी कवि रोमानियत से भरकर इस विश्व को अपनी कल्पना से सुन्दर बनाते हैं।

"आह! कल्पना का सुन्दर यह जगत
मधुर कितना होता"

वस्तुतः छायावाद में जीवन के मूल तत्वों सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् में से 'सुन्दरम्' तत्व पर अत्यधिक बल दिया गया है जिसका कारण उनकी रोमानियत तथा भावुकता में है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

आँचलिक उपन्यास उन उपन्यासों को कहा जाता है जिसमें किसी अंचल विशेष का बिना किसी विचारधारा के चश्मे के यथार्थ वर्णन किया जाता है।

फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल उपन्यास इस धारा का औपन्यासिक प्रस्थान बिन्दु है। कुछ समीक्षकों के अनुसार यह परम्परा हिन्दी में मौलिक है जबकि कुछ समीक्षकों ने पश्चिम में मारिया एजवर्थ, कॉनराड इत्यादि के उपन्यासों को आंचलिक माना है।

आंचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ

- अंचल विशेष में रम जाना तथा भौगोलिक तथा सांस्कृतिक वर्णनों से उस अंचल का सम्पूर्ण नक्शा पाठक की आँखों में खींच देना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- घटनाओं तथा वर्णनों की बहुलता।
- चरित्रों की बहुलता तथा किसी भी चरित्र में नायकत्व न होना अंचल का ही नायक के रूप में उभरना।
- लोकभाषा तथा तद्भव, देशज शब्दावली की प्रधानता होना आंचलिक उपन्यासों के शिल्प की निर्णायक विशेषता है कई बार यह भाषायी समस्या हिन्दी के सभी पाठकों तक उपन्यास की पहुँच बनने में बाधक हो जाती है।

हिन्दी के आंचलिक उपन्यास

मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु
परती परीकथा - फणीश्वरनाथ रेणु
बलचनमा - नागार्जुन
रतिनाथ की चाची - नागार्जुन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन तरु पुकारूँ – रांगेय राघव

जिंदगीनामा – कृष्णा सोबती

जल टूटता हुआ – रामदरश मिश्र

पानी के प्राचीर – रामदरश मिश्र

चौथी मुट्ठी – शैलेश मटियानी

होलदार – शैलेश मटियानी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मौलिकता की दृष्टि से केशवदास के काव्यकर्म का परीक्षण कीजिये। 15

रीतिकालीन आचार्य कवियों मे यद्यपि मौलिकता का नितान्त अभाव ही दिखता है क्योंकि उन्होंने संस्कृत के काव्यशास्त्रो के सरल प्रयोगों का अनुवाद मात्र किया है किन्तु केसवदास ने अपनी काव्ययात्रा मे कई मौलिक उद्भावनाएँ भी की है।

उनकी मौलिकता

- रामचंद्रिका – कथानक का आधार लेने में कई संस्कृत के ग्रंथो का सहारा लिया है जो मौलिक है।
  - राम के राजसी स्वरूप की उद्भावना कराई।
  - बहुछन्द की कल्पना
  - संवाद योजना मे भी केशव की चारु रत्नात्मकता दिखती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

• काव्यशास्त्र में - केशवदास ने कविप्रिया तथा रसिकप्रिया ग्रंथ लिखे जिनमें उनकी काव्यशास्त्रीय मौलिकता दिखती है -

- अलंकार भेद तथा नायिका भेद में मौलिक धारणाएँ
- उपमा व रूपक के भेदों में नवीनता
- अन्योक्ति का सर्वप्रथम प्रयोग

वस्तुतः केशव ने केवल संस्कृत काव्यशास्त्र का अनुकरण न करते हुए मौलिक लेखन भी किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation